सितारे
झीलों की नगरी के!

आइए, उदयपुर से सीखें
(ULC)
Resource Book 2008

सितारे झीलों की नगरी के!
- मल्टीवर्सिटी <www.multiversity.org> के लिए एक तोहफा

Copyleft* 2008

शिक्षान्तर आन्दोलन,
83, आदिनाथनगर, उदयपुर, राजस्थान - 313004
+91-294-245-1303
shikshantar@yahoo.com
www.swaraj.org/shikshantar

** इस पुस्तिका को निःसंकोच दूसरों के साथ बॉटा जा सकता है।*

परिचय

हर जगह एक अनोखा खज़ाना है। हम अकसर केवल ऐतिहासिक जगहों, अनोखे गार्डन, पार्क और सांस्कृतिक चीजों को ही देखते हैं या समझ पाते हैं। लेकिन हमारे स्थानीय लोग भी हमारे लिए खजाना है, हालॉकि स्थानीय लोगों को इतनी अहमियत देना हमें कभी सिखाया ही नहीं जाता। जबकि स्कूली-व्यवस्था और मीडिया तो स्थानीय चीजों के बारे में हमारे मन में हीन भावना पैदा करते हैं और इनके बजाय ऐसे लोगों (फिल्म-स्टार, खिलाड़ी, राजनेता) का बढ़ा-चढ़ाकर प्रचार करते हैं, जिनसे शायद ही हम कभी मिलते हैं। ''आइए, उदयपुर से सीखें'' प्रकिया में हमारी कोशिश बिल्कुल विपरीत रही है कि हम अपने शहर की असली ताकत और खूबसूरती को पहचानें...खासकर उदयपुर के सितारे - स्थानीय कलाकारों और हुनरमन्द लोगों को; जो अपने कला-कारीगरी और प्रेरणादायी जीवन के माध्यम से उदयपुर को खूबसूरत शहर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

इस पुस्तिका का मकसद है कि हमारे परिवार, दोस्त, मेहमान, युवा एवं बच्चे हमारे बीच मौजूद इन सितारों से रू-ब-रू हो सकें। ये लोग कला से लेकर स्वास्थ्य तक सभी क्षेत्रों से जुड़े हैं और स्वप्रेरणा से काम कर रहे हैं। ये सृजनशील एवं हुनरमन्द हैं तथा उदयपुर और यहॉ के निवासियों के बारे में सोचते हैं। ये हमारे *चमकते सितारे* हैं।

हमने यह भी महसूस किया कि जितने ज्यादा लोग इनके बारे में जानते हैं और इनके काम को प्रोत्साहित करते हैं, उतने ही ज्यादा ये अपने काम को जारी रखने के लिए प्रेरित होते हैं। आज यह जरूरी है कि हम ऐसे सीखने के मौके बनाएॅ, जिनमें कम यात्रा करने की जरूरत हो। हमें लगता है कि इससे युवाओं के लिए सीखने के बहुत अवसर खुल सकेंगे, खासकर उनके लिए जो स्कूली-व्यवस्था के शिकार हैं।

हम उम्मीद करते हैं कि यह पुस्तक दूसरे शहरों में भी लोगों को ऐसे प्रयास करने के लिए प्रेरित कर सकेगी। अपनी जगह में रहने वाले ऐसे हुनरमन्द लोगों के काम को प्रोत्साहित करना और उन्हें अन्य लोगों के साथ बॉटना एक महत्वपूर्ण कदम होगा। अगर आपके कोई प्रश्न हैं या शुरूआत करने के लिए सुझाव चाहते हैं, तो कृपया सम्पर्क करें।

शुभकामनाओं सहित,
शिक्षान्तर परिवार

श्रद्धांजलि

(1919-2008)

स्व. श्री दयालचन्द्र सोनी

दयालजी उदयपुर के एक सम्माननीय बुजुर्ग थे, जिन्हें सब लोग आदर से माटसाब कहकर बुलाते थे। आपने करीब 25 किताबें लिखीं हैं और आपके लगभग 400 लेख विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। आप उम्दा शायरी/कविताओं के साथ बहुत अच्छा गाते भी थे। आप कुछ सालों तक विद्याभवन और सेवामन्दिर के साथ जुड़े तथा बाद में कई सालों तक गॉधीजी की नई तालीम पर आधारित बुनियादी विद्यालय का संचालन किया। अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक दयालजी अपनी कहानियॉ, अनुभव एवं शिक्षा व विकास पर अपने विचार बॉटने के लिए बहुत सक्रिय थे। एक लेखक एवं विचारक होने के बावजूद आपने अपना जीविकोपार्जन आटाचक्की के माध्यम से किया। इस कर्म-साधना में इनकी पत्नी ने जीवनभर सहयोग दिया। आपका घर और पुस्तकालय आज भी लोगों के लिए खुला है।

अगर आपकी हड्डी खिसक गई, या कहीं मोच आ गई है या कमर-दर्द से परेशान हैं, तो किसी डॉक्टर के पास भागने की कोई जरूरत नहीं है! दिन हो या रात, मानारामजी डांगी आपके ईलाज के लिए हर वक़्त उपलब्ध हैं, जो उदयपुर से 8 किलोमीटर दूर लोयरा गॉव में रहते हैं। आपको हड्डियों, नसों व मॉसपेशियों के ईलाज का कुदरती वरदान है। शुरूआत में आप बकरियों की हड्डियॉ ठीक किया करते थे, धीरे-धीरे इंसानों का ईलाज करने लगे। मसाज करने के अतिरिक्त मानारामजी जड़ी-बूटियों के नुस्खे बताते हैं। अगर मर्ज उनके बस का नहीं है, तो भी वे तुरन्त बता देते हैं। डॉक्टरों की तरह ये कभी भी कोई फीस नहीं मॉगते, बल्कि आप स्वेच्छा से जो भी सहयोग करते हैं, उसे स्वीकार करते हैं।

मानाराम डांगी

श्रीमान् एवं श्रीमती आर. सी. मेहता

ऐसा बहुत कम सुनने में आता है कि कोई शहरी जीवन को छोड़कर बाहर गॉव या जंगल में सादा जीवन जीना चाहता हो। लेकिन मेहता साहब और उनकी पत्नी के अनुसार बुढ़ापे में सुकून के पल तो आश्रम में ही बिताने चाहिए। आप दोनों ने उदयपुर से 15 किलोमीटर दूर नयाखेड़ा गॉव में 'तपोवन आश्रम' स्थापित किया। मेहता साहब कृषि महाविद्यालय में डीन रहे हैं, लेकिन आज वे ऑर्गेनिक एवं प्राकृतिक खेती के पक्षधर हैं। प्रसिद्ध जापानी किसान फुकुओका के विचारों से प्रेरित होकर आपने रासायनिक खेती का प्रतिकार किया और पिछले 15 सालों से तपोवन आश्रम में प्राकृतिक तरीकों से खेती कर रहे हैं। पति-पत्नी दोनों आगन्तुकों के साथ अपना ज्ञान और अनुभव बॉटने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। ये उन युवाओं को आमन्त्रित करते हैं, जो खेती एवं हर्बल पौधों के बारे में सीखने में रुचि रखते हैं।

तपोवन आश्रम

हकीम हातिम भाई

सोमवार से शनिवार तक जूतों की दुकान और रविवार को अनोखा देवस्थान! हाथीपोल में शनिदेव के मन्दिर के पास हकीम हातिम भाई के यहाँ रविवार के दिन लोगों की एक लम्बी कतार लगती है। आप यूनानी एवं पारम्परिक जड़ी-बूटी चिकित्सा के अनुभवी हकीम हैं। आप स्वयं जंगल से जड़ी-बूटियाँ लाते हैं, अपने हाथों से दवाइयाँ करते हैं और लोगों का निःशुल्क इलाज करते हैं।

आप किसी प्रकार के सरकारी या गैर-सरकारी संस्था से सम्बन्धित नहीं हैं। जो लोग इनकी दवाओं से स्वस्थ होते हैं, वे ही लोग रविवार के दिन दवाइयाँ तैयार करने एवं लोगों को देने में इनकी मदद करते हैं। वास्तव में रुचि रखने वाले लोगों के साथ हातिमजी अपना ज्ञान बाँटने के लिए तत्पर हैं।

एस. आई. ई. आर. टी. कार्यालय में एक अनूठे कमरे में आप मिल सकते हैं जगदीशजी से। विभिन्न कलाकृतियों, खिलौनो, सांस्कृतिकं एवं पारम्परिक हस्तकला के नमूनों से सज्जित ऐसी जगह अधिकांशतः किसी सरकारी कार्यालय में नहीं मिल सकती। जगदीशजी यहॉ कला शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग के साथ काम करते हैं। 13 साल की उम्र से वे मिनिएचर पेंटिंग कर रहे हैं तथा मिट्टी, कोलाज व कबाड़ के साथ बहुत प्रयोग करते हैं। जगदीशजी की रुचि कबाड़ से जुगाड़ में तब हुई, जब वे मिट्टी के मॉडल बना रहे थे; वे चाहते थे कि कुछ अनोखे मॉडल बनाएँ और फिर उन्होंने मिट्टी के साथ वेस्ट सामग्री का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। कुछ समय बाद वे श्रीनिवासन अय्यर से मिले, जो उनके अच्छे मित्र एवं प्रेरक बन गए। अभी जगदीशजी किसी भी चीज को बाहर नहीं फैंकते, बल्कि हर चीज का बेहतर इस्तेमाल करते हैं।

जगदीश कुमावत

जास्मीन जॉन

इनसे आप इनके कैफे रेस्टॉरेण्ट में मिल सकते हैं। हालॉकि इनकी दिलचस्पी अपने हाथों से कबाड़ की बहुत सुन्दर चीजें बनाने में ज्यादा है, बजाय खाना बनाने के। जास्मीनजी पिछले चार दशक से कबाड़ से विभिन्न प्रकार की चीजें बना रही हैं। बचपन से ही आपकी कबाड़ से सृजनात्मक चीजें बनाने में रुचि रही है। जस्मीन पेपर-कटिंग, ब्लॉक-प्रिंटिंग, मॉल्डिंग, रंगाई, म्यूरल्स एवं मोजेक बनाने का काम बहुत कुशलता से करती है। इन दिनों वे मार्बल स्लरी (जो वे सुखेर से लाती हैं) से फ्रेम्स, कटोरियॉ-प्लेट्स, मूर्तियॉ आदि बना रही हैं। जास्मीन अपनी कलाकृतियों की प्रदर्शनी देशभर में लगा चुकी हैं और हजारों लोगों के साथ अपने कला बॉट चुकी है।

श्रीनिवासन अय्यर

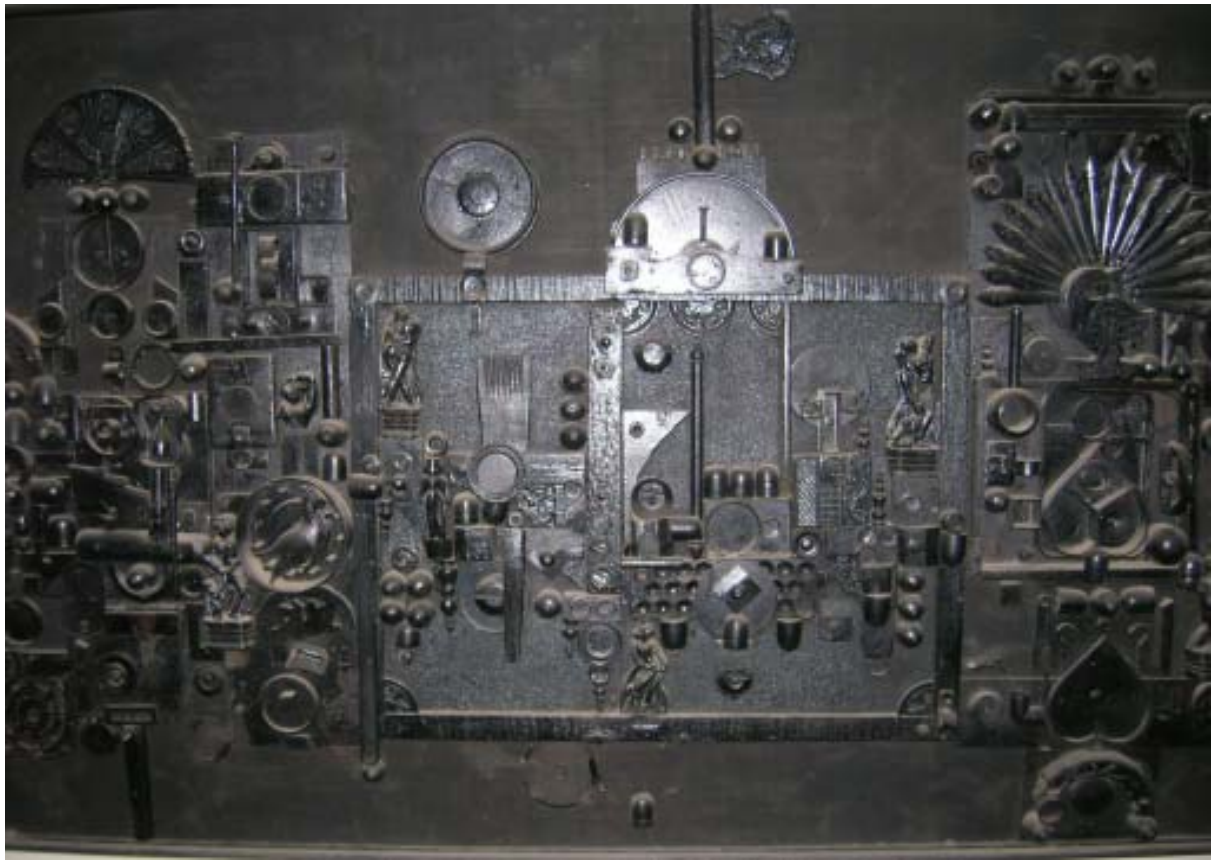

आपको यकीन नहीं होगा कि एक संस्कृत के प्रोफेसर की एक और जिन्दगी भी है, जो शायद अधिकतर लोग नहीं जानते हैं! आप एक आम प्रोफेसर की तरह नहीं हैं, बल्कि बहुत सृजनशील एवं जोश से परिपूर्ण है। श्रीनिवासनजी बचपन से कबाड़ से जुगाड़ में बहुत रुचि रखते हैं। कम उम्र में ही आपके पिताजी का देहान्त हो गया था, इसलिए खिलौनों के लिए आपके पास पर्याप्त पैसा नहीं था। तो आप खुद अपने खिलौने कबाड़ की चीजों से बना लिया करते थे। श्रीनिवासनजी के काम का विस्तार इनकी मॉ की मदद से हुआ, जो एक शिक्षिका थी और उनको कई तरह के मॉडल्स एवं टीचिंग एड की जरूरत पड़ती थी। श्रीनिवासनजी ये सब चीजें वेस्ट चीजों से बनाते थे। तैल से एलर्जी से कारण आप पेंटिंग कला से नहीं जुड़ पाए, लेकिन आपने जुगाड़ और कोलाज के माध्यम से अपनी कला को जारी रखा। आपने अपना पूरा घर वेस्ट मेटेरियल से सजाया है - फर्नीचर से लेकर सजावटी चीजों तक। दिलचस्पी रखने वाले लोगों का आपके यहॉ स्वागत है।

श्रद्धांजलि
(1933-2008)

एक विचित्र प्रकार की कला के लिए अपने जीवन के 35 साल समर्पित कर देना कोई कम उपलब्धि नहीं है! दौलतरामजी ने थर्माकोल से पूरा एक संग्रहालय बनाया है - चित्तौड़ का किला, सहेलियों की बाड़ी, आक र्कि दरवाजे, मूर्तियॉ ...विविधता की कोई सीमा ही नहीं! ये सब दौलतजी के जादुई हाथों की महीन कारीगरी के नमूने हैं। इलेक्ट्रिक मोटर के इस्तेमाल और मेटल वर्क से तो इनका काम और भी जटिल लगता है। आपका सपना था कि उनकी यह कला उदयपुर के लोगों और पर्यटकों के बीच हमेशा जीवन्त रहे। आज इनकी पोतियॉ इस अनूठी कला को आगे बढ़ा रही हैं।

स्व. श्री दौलतराम लौहार

देवीलाल प्रजापत

माटी की छोटी सी हॉंडी को हाथों की थाप से एक बड़े मटके या सुराही में तब्दील करना एक प्रकार का जादू ही है। और देवीलालजी इसके कुशल जादूगर हैं। साधारण औजारों की धीमी - धीमी थाप से एक छोटे से बर्तन को विस्तृत आकार में बदल देते हैं। देवीलालजी, उनकी पत्नी व छोटा बेटा दिनेश साथ मिलकर मिट्टी के बर्तन बनाने का काम करते हैं। विभिन्न प्रकार के मटकों के अलावा आप दीवाली के मौके पर दीये भी बनाते हैं। देवीलालजी मानते हैं कि इलेक्ट्रिक चाक खरीदने से भले ही वे ज्यादा और तेज गति से काम कर सकेंगे, लेकिन इससे उनकी कलाकृतियों की गुणवत्ता कम हो जाएगी; इसलिए वे आज भी हाथ से चलने वाले चाक का ही इस्तेमाल करते हैं। देवीलालजी खुले दिल वाले इंसान हैं, जो इस पारम्परिक कला में रुचि रखने वाले लोगों को सीखने के लिए आमन्त्रित करते हैं। आप उनसे बेदला में इनके घर पर मिल सकते हैं व अपने हाथों से चाक चलाने का मौका पा सकते हैं।

शाहिद एवं शारिक़ परवेज़

इन दोनों भाइयों को आनन्द मिलता है बच्चों के साथ रहने में। क्योंकि बच्चे ही इनकी प्रेरणा हैं। शाहिद को पसन्द है बच्चों के बनाए रंग-बिरंगे हाथी! तो शारिक़ को आनन्द मिलता है अलग-अलग ज्यामितीय आकृतियों और रंगों से प्रयोग करने में। इनके परिवार में सब कलाकार हैं। शाहिद विभिन्न बेकग्राउण्ड पर चित्रकारी के प्रयोग करते रहे हैं जैसे - अख़बार, हैण्डमेड पेपर, ...आदि। शारिक को भी पेपरमेशे के मास्क बनाने और स्व-रचित संगीत को दूसरों के साथ बॉटने में सुकून मिलता है। सिटी पैलेस के निकट दोनों की बहुत सुन्दर आर्ट गैलेरीज हैं, जहॉ आप इनकी सृजन की दुनिया से रू-ब-रू हो सकते हैं।

मीना बया को बेहद पसन्द हैं पेंटिंग करना, सितार बजाना और योग करना। इनके परिवार में कोई भी प्रोफेसनल कलाकार नहीं है। केवल व्यापार से जुड़े पारिवारिक माहौल के बावजूद आपने अपनी पहचान चित्रकारी के माध्यम से बनाने का निश्चय किया। इनके चित्रों में राजस्थान के कठिन परिश्रमी लोगों की अभिव्यक्ति है। मीनाजी कई सालों से प्राकृतिक रंगों से प्रयोग करती रही हैं। बच्चों व युवाओं के साथ काम करना और प्रकृति के साथ समय बिताना इन्हें बहुत अच्छा लगता है, कभी साईकिल यात्राएँ तो कभी बर्ड-वॉचिंग करना। अपने घर में इनका एक छोटा सा वर्कशॉप है, जहाँ आपकी इनकी कलाकृतियाँ देख सकते हैं। मीनाजी की कला उदयपुर एवं दुनिया के विभिन्न हिस्सों में प्रदर्शित की जा चुकी हैं। वेबसाइट देखें - <www.meenabaya.com>

मीना बया

मात्र 12 साल की उम्र से श्री दीनदयाल दशोत्तर नियमित रूप से चरखा चला रहे हैं। आप सिर्फ अपने हाथों से काते गए सूत का कपड़ा पहनते हैं। दशोत्तर साहब गॉधीजी के मूल्यों एवं विचारों में विश्वास करते हैं। इनका मानना है कि हर इंसान को अपने हिस्से का अन्न खुद उगाना चाहिए, अपने कपड़े के लिए खुद कताई करनी चाहिए तथा अपना घर अपने हाथों और श्रम से बनाना चाहिए। आज ९० साल की उम्र में भी आप नियमित चरखा चलाते हैं और एक गार्डन की देखभाल कर रहे हैं। कड़ियॉ गॉव में आपकी एक गोशाला है, जहॉ ऐसी गायों की देखभाल की जाती है, जो दूध नहीं देती और उनके मालिकों द्वारा यूँ ही छोड़ दी जाती है। इस काम के लिए दशोत्तर साहब सिर्फ व्यक्तिगत चन्दा लेते हैं, पर किसी प्रकार का सरकारी अनुदान नहीं लेते हैं। जो लोग आपके साथ समय बिताना चाहते हैं और चरखे व खादी के बारे में सीखना चाहते हैं, इनसे सम्पर्क कर सकते हैं।

दीनदयाल दशोत्तर

किरण मुर्ड़िया

उदयपुर के प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक दृश्य किरण मुर्ड़िया को बहुत प्रेरित करते हैं; एक बार जो दिल को छू गया, वे उसे रंगों से विभिन्न आकारों में कैनवास पर उड़ेल देती हैं। किरणजी की शैली बहुत अनूठी है। बिना ब्रश का उपयोग किए ये सभी प्रकार के विविध टेक्स्चर बनाती हैं। इनके टूल्स हैं - रोलर, कंघे, रबर और रोजमर्रा के काम में आने वाली चीजें। अधिकांशतः मेवाड़ की चीजें इनकी कला के विषय हैं, जैसे - नीमचमाता मंदिर या बड़ी के तालाब में मछुआरों के नावें। आप धरती के रंगों से भी बहुत प्रेरित हैं और अपने हाथों को मिट्टी में डालने और उससे अलग-अलग आकार देने में आपको बहुत मजा आता है। आप और आपकी बहन आभा को संगीत में भी बहुत रुचि है।

संदीप बोर्दिया

सन्दीप बोर्दिया कोई पारम्परिक किसान नहीं हैं। आप एक कम्प्यूटर प्रोडक्शन कम्पनी में काम करते थे। 10 साल की नौकरी के बाद अपने जीवन को अपने हाथ में लेने के लिए आपने शहर में खेती की शुरुआत की। सबसे पहले आपने अपने घर की छत पर कुछ सब्जियॉ उगाना शुरु किया, ताकि अपनी बाजारी निर्भरता को कम कर सकें। धीरे-धीरे रुचि बढ़ने पर इन्होंने बरसों के खाली पड़े अपने प्लॉट (जो पड़ोसियों के कबाड़ का ठिकाना बन गया था) को साफ करके वर्मी कम्पोस्ट तैयार करना शुरू किया और उसी जगह में खेती करने लगे।

बहुत कम संसाधनों एवं परिवार के बहुत कम सहयोग के बावजूद आप विभिन्न कार्यशालाओं, संस्थाओं व अन्य जगहों पर जाकर खेती के बारे में विविध जानकारियॉ जुटाते रहे और अपने खेत में प्रयोग करते रहे। आज वे अपने डेढ़ बीघा के खेत में पड़ोसियों के रसोईघर से निकले पानी का सिंचाई में उपयोग करते हैं, खुद वर्मी कम्पोस्ट तैयार करते हैं, प्राकृतिक कीट-प्रतिरोधक तैयार करते हैं और अपने पूरे मोहल्ले के अतिरिक्त कई जगहों पर ऑर्गेनिक एवं ताजा सब्जियॉ व अनाज उपलब्ध करा रहे हैं।

छोटा बच्चा जानके कोई भूल ना जाना रे! 20 वर्षीय जगदीश प्रजापत पारम्परिक कुम्हार परिवार से है। जगदीश मोलेला गॉव (जो टेराकोटा की मूर्तियों के लिए दुनियाभर में प्रसिद्ध है) में मिट्टी के साथ खेलते हुए बड़ा हुआ। छोटी उम्र में ही इन्होंने अपने पिताजी द्वारा बनाई गई मिट्टी की टाइल्स पर काम करना शुरू कर दिया। 16 साल की उम्र में वे सभी तकनीकें सीख ली, जो अच्छी कलाकृतियॉ बनाने के लिए आवश्यक थी। ''मिट्टी में दो तरह के काम होते हैं, एक - चाक पर और दूसरा प्लेन वर्क।'' जगदीश बताते हैं कि चाक के काम में वो इतना कुशल नहीं है, पर प्लेन वर्क तो वो अपने पिताजी से भी अच्छा कर लेते हैं। जगदीश रुचि रखने वाले लोगों के साथ अपनी कला बॉटने के लिए खुले हैं। ये खुद अपनी कला के साथ कई प्रयोग कर रहे हैं, साथ ही लकड़ी पर मूर्तिकारी एवं म्यूरल बनाने में बहुत रुचि रखते हैं, ताकि अपनी कला को अन्य विधाओं से भी अभिव्यक्त कर सकें। इनकी कला के बारे में जानने के लिए शनिवार व रविवार को मोलेला में इनसे मिल सकते हैं।

जगदीश प्रजापत

श्यामलाल जी

अधिकांश लोग सोचते हैं कि एल्यूमिनियम का उपयोग सिर्फ खाना बनाने के बर्तन के रूप में ही हो सकता है। लेकिन श्यामलालजी साधारण एल्यूमिनियम को कलात्मक चीजों में तब्दील कर देते हैं। आपकी इस कला को मीनाकारी के नाम से जाना जाता है, जिसमें एल्यूमिनियम की प्लेट पर विविध रंगों से डिजाइन की जाती है। एल्यूमिनियम धातु की प्लेट को छोटे-छोटे सांचों से मोल्ड किया जाता है, जो बहुत सुन्दर डिजाइन के रूप में उभर आते हैं। बाद में इनमें कुछ खास किस्म के रंग भरते हैं, जो धातु पर स्थायी रूप से चिपक सकते हैं। श्यामलालजी पिछले 20 सालों से इस कला से जुड़े हैं। इन्होंने इस कला की शुरूआत ''मेवाड़ आर्ट्स'' में की, बाद में पूरी तरह से इस कला को जारी रखने का निश्चय किया। छोटे बच्चों सहित आपका पूरा परिवार आज मीनाकारी का काम करता है। ये बड़े व छोटे टेबल, कुर्सियॉ, फोटो फ्रेम आदि बनाते हैं। श्यामजी चाहते हैं कि और लोग मीनाकारी सीखें और उनके साथ काम करें।

मुकेश गांची

पौ फटते ही, दिल्ली गेट पर धानमण्डी के निकट एक सूनसान गलियारा धीरे-धीरे हलचल के रूप में तब्दील होने लगता है। एक के बाद बॉस की खूबसूरत चीजें बेचने वाली महिलाओं की लम्बी कतार लग जाती है...और यह जगह बॉस की टोकरियॉ, फल आदि बेचने वालों और पर्यटकों से खचाखच भर जाती है। यहीं एक कोने में आप मिल सकते हैं मुकेशजी से। आपका पूरा परिवार बॉस की विभिन्न आकार एवं प्रकार की टोकरियॉ बनाता है। इसके अलावा ये बॉस से बक्से, छाते आदि भी बनाते हैं। खास बात यह है कि इनके बच्चे भी हमेशा साथ में बॉस से नए-नए प्रयोग करते रहते हैं। मुकेशजी हर किसी सीखने वाले को प्रोत्साहित करते हैं। वे आपको दो बार खुद करके दिखाऍंगे, तीसरी बार आपके हाथों में टूल्स दे देंगे और बॉस को छीलने और टोकरी बुनने का काम आपसे खुद से करवाऍंगे। वे कभी परवाह नहीं करते कि उनके औजार ख़राब हो जाऍंगे! मुकेशजी बहुत ही मिलनसार, बातूनी और मजाकिया इंसान हैं। यहॉ आपको लगेगा कि आप किसी गली में नहीं, बल्कि अपने घर में बैठे हैं।

अपने घर के बरामदे में लहरी बाई और उनका परिवार लकड़ी के फर्नीचर के काम में व्यस्त मिलेंगे। उनके पति, बेटा और पोता सभी सुथारी का काम करते हैं। लेकिन लहरी बाई की दिलचस्पी एक दूसरे ही काम में है...कागज के काम में! और खासकर पेपरमेशे की टोकरियॉ बनाने में। बचपन से ही आपको इस काम में रुचि थी। आपने अपनी मॉ के साथ पेपरमेशे की यह कला सीखी। आपने पेपरेमेशे की ढेर सारी चीजें बनाई हैं और अपनी पुरानी चीजों की मरम्मत भी करती रहती हैं। लहरी बाई लोगों को अपने घर में इस तरह से आमन्त्रित करती हैं, जैसे वे उनके परिवार के सदस्य हों। इस उम्र में कमजोरी के कारण लहरी बाई अपना यह हुनर और ज्ञान युवा लोगों के साथ बॉटना चाहती है। आप शिक्षान्तर द्वारा आयोजित पेपरमेशे से टोकरी बनाने की कार्यशाला में भाग ले चुकी हैं, जिसमें सबने इनसे बहुत सीखा।

लहरी बाई

दिल से जवान और अनुभवों से बुजुर्ग डॉ. अजय पॉल एक अनोखे प्रकार के होम्योपैथ हैं। अपने ‘‘परिवार होम्योपैथी क्लीनिक’’ के माध्यम से आपने उदयपुर में कई परिवारों को अस्पतालों और डॉक्टरों पर निर्भरता से मुक्त होने में मदद की है। आप लोगों को हमेशा दवाइयॉ नहीं लेने तथा उसके बजाय अपने खानपान व रहन-सहन में बदलाव लाने की सलाह देते हैं। आपने कई लोगों को टीकाकरण के खतरों से आगाह किया है। आपका मानना है कि मिट्टी में खेलने, जानवरों के साथ रहने और उस रोग से ग्रसित बच्चों के साथ रहने से बच्चे की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। आप यह कभी नहीं कहते कि होम्योपैथी श्रेष्ठ चिकित्सा पद्धति है, लेकिन यह एलोपैथी की तरह जहरीली और खतरनाक तो नहीं है। आप मानते हैं कि गॉवों की पारम्परिक जीवन-शैली और गॉवों के लोगों के पास अपार ज्ञान व बुद्धिमता है, जिनसे इन्होंने खुद बहुत सीखा है। आपके पास कहानियों, प्रेरक प्रसंगों और अनुभवों का खजाना है! इनकी मुस्कुराहट और बात करने का अन्दाज ही आधी बीमारी को दूर कर देते हैं।

अजय पॉल

अगर आप संगीत और वाद्ययन्त्रों में दिलचस्पी रखते हैं, तो पंचवटी में स्थित 'हिन्द म्युजिकल इंस्ट्रूमेंट्स' आपके लिए बेहतरीन जगह है। इस संगीत केन्द्र के संचालक श्री भागीरथ ब्यावट उदयपुर के प्रसिद्ध सारंगी वादक हैं, जिन्हें इसके लिए राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुके हैं। केवल सारंगी ही नहीं, कोई भी तारों से सजा साज आपकी अंगुलियों का स्पर्श पाकर झंकृत हो उठता है। आप संतूर, वायलिन, गिटार, मेण्डोलिन, बांसुरी आदि बखूबी बजा लेते हैं। इनके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के वाद्ययन्त्र आपके यहाँ उपलब्ध हैं।

भागीरथजी ने 5 साल की उम्र में ही संगीत सीखना शुरू कर दिया था। आप अपने परिवार की छठी पीढ़ी के पारम्परिक सारंगी वादक हैं। शुरूआत में आपने अपने पिताजी से सारंगी सीखी तथा बाद में 'गुरु-शिष्य परम्परा' के तहत् अपने गुरु से। अब तक आप देश के विभिन्न स्थानों पर आयोजित संगीत सभाओं में अपनी कला का प्रदर्शन कर चुके हैं। आप अपनी कला एवं अनुभव बाँटने के लिए खुले हैं। वाद्ययन्त्र बजाना सीखने के लिए इनसे सम्पर्क कर सकते हैं।

भागीरथ

धर्मनाथजी

हारमोनियम, ढोलक और कुर्सियों में कौनसी चीज समान है? ...कि ये सब धर्मनाथजी के हाथों से बने हैं! पिछले कई दशकों से अपने हाथों से हारमोनियम और ढोलक बनाते आ रहे हैं। आप लकड़ी के साधारण टुकड़ों का काटकर-जोड़कर उन्हें बखूबी वाद्ययन्त्र का रूप देने में बहुत कुशल हैं। ...और बचे हुए टुकड़ों से कुर्सियाँ बना लेते हैं या उनकी मरम्मत कर लेते हैं। आपने यह सब खुद ही सीखा है। शुरूआत में आपने एक वाद्ययन्त्रों की दुकान पर काम किया। धर्मनाथजी वाद्ययन्त्र बनाने एवं बजाना सीखने के इच्छुक लोगों के साथ अपना हुनर बॉटने के लिए खुले हैं। आप स्कूलों और कॉलेजों में कई संगीत कार्यशालाएँ कर चुके हैं। उम्र में बड़े होने के बावजूद आप उर्जा से परिपूर्ण हैं और एक युवा दोस्त की तरह पेश आते हैं। आपकी एक भजन मण्डली भी है।

महावीर जैन

मूलतः जापानी चिकित्सा पद्धति होने के बावजूद भारत में भी रेकी बहुत प्रचलित है। यह एक प्रकार की हीलिंग है, जिसमें ब्रह्माण्ड की उर्जा को ग्रहण करके जरूरतमन्द व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कराया जाता है। इसमें किसी प्रकार की दवा, तकनीक एवं साधनों की आवश्यकता नहीं है। महावीरजी रेकी मास्टर हैं। आयड़ में आपके घर में ही 'महावीर रेकी एवं योग प्रशिक्षण केन्द्र' है, जहॉ आप रोगियों का निःशुल्क उपचार करते हैं। आप रेकी एवं योग के निःशुल्क शिविर भी आयोजित करते हैं। आप बहुत मिलनसार व्यक्ति हैं और अपनी इन कलाओं को अन्य लोगों के साथ बॉटने के लिए हमेशा खुले हैं। रेकी एवं योग सीखने के इच्छुक लोग आपसे सम्पर्क कर सकते हैं।

13 साल की उम्र में ही (छठी कक्षा से) स्कूल छोड़कर आप कला-साधना में जुट गए और आज आप इस क्षेत्र के जाने माने कलाकार हैं। राजारामजी 'पिछवाई' शैली के कलाकार हैं। पिछवाई एक प्रकार की मिनिएचर चित्रकला है, जो श्रीनाथजी के मन्दिर (नाथद्वारा, राजस्थान) से जुड़ी है। राजारामजी ने यह कला 15 साल तक गुरु-शि य परम्परा (जो आज भी नाथद्वारा के चित्रकार समुदाय में प्रचलित है) के तहत् नाथद्वारा में अपने गुरु के साथ रहकर सीखी। इस कला में सारा काम - कैनवास/कपड़ा तैयार करना, ब्रश बनाना, प्राकृतिक रंग तैयार करना, पेंटिंग करना आदि सब हाथ से किया जाता है। अभी दो युवा दोस्त राजारामजी के साथ रहकर यह कला सीख रहे हैं। जो लोग यह कला सीखने में वास्तव में रुचि रखते हैं और कम से कम 5 साल इस कला को समर्पित करने को तैयार हैं, उनके साथ यह कला बॉटने के लिए आप हमेशा खुले हैं। पिछवाई कला सिखाने के लिए आप किसी प्रकार की कोई शुल्क नहीं लेते। राजारामजी बहुत ही हॅसमुख एवं प्यारे इंसान हैं, जिनके साथ रहकर सीखना बहुत आनन्दपूर्ण अनुभव होगा।

राजाराम शर्मा

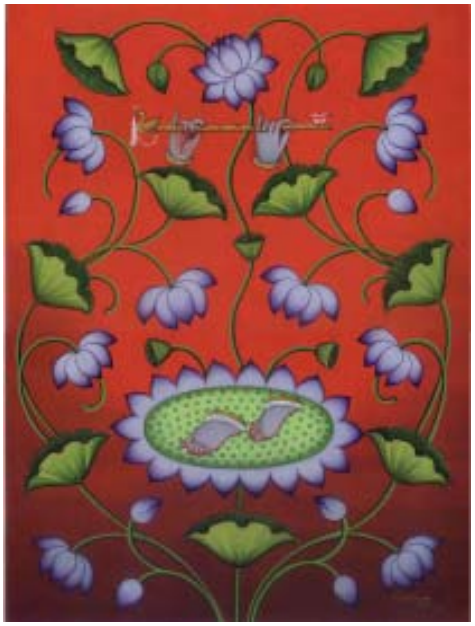

आपने एक दिन अखबार में पढ़ा कि देवास, मध्यप्रदेश ने तय किया है कि वे अपने यहॉ घटते पेयजल की समस्या से निपटने के लिए कुछ ठोस कदम उठाएँगे। पूरे शहर में बड़े स्तर पर वर्षाजल संरक्षण का कार्यक्रम शुरू किया गया और उसमें बहुत हद तक सफलता मिली। पी.सी. जैन को वहीं से प्रेरणा मिली और उन्होंने देवास में वर्षाजल संरक्षण कार्यक्रम के आयोजकों से सम्पर्क किया। उन्हें वहॉ से अच्छा फीडबेक मिला और इन्होंने उदयपुर में वर्षाजल संरक्षण का काम शुरू कर दिया। आप एक डॉक्टर (एलोपैथ एवं होम्योपैथ) होने के बावजूद जल संरक्षण के लिए बहुत काम कर रहे हैं। आपने उदयपुर में कई लोगों के घरों, स्कूलों, सामुदायिक भवनों आदि में वर्षाजल संरक्षण सिस्टम लगाने में मदद की है। पी. सी. जैन ने ग्वारपाठे को लेकर भी कई प्रयोग किए हैं - शेविंग क्रीम से लेकर विभिन्न बीमारियों के इलाज में। आप और आपकी पत्नी (ये भी होम्योपैथ हैं) अपने घर में सोलर कुकिंग में बहुत दिलचस्पी रखते हैं। सुन्दरवास में इनके घर एवं क्लीनिक में इनसे सम्पर्क कर सकते है।

पी.सी. जैन

मदन प्रजापत

उदयपुर यहॉ की कला के लिए बहुत प्रसिद्ध है और उसमें भी खासकर पारम्परिक मिनिएचर पेंटिंग। प्राकृतिक रंग, छोटे-छोटे चित्रों में बहुत बारीकी से किया काम और अनूठे दृश्य...मिनिएचर चित्रकारी बेहद आनन्द का विषय है। अधिकांश चित्रकार शहर के बीच में मिलेंगे, लेकिन मदन प्रजापत देवाली में अपने घर पर मिनिएचर पेंटिंग करते हैं। इन्होंने शुरूआत में यह कला अपने पड़ोसी कलाकार से सीखी। लेकिन पिछले दस सालों से इन्होंने स्वयं विभिन्न प्रयोग करते हुए अपनी अलग शैली विकसित की है। इन प्रयोगों में इनके परिवार का बहुत सहयोग रहा। इनके भाई और बहनें सभी इस सृजनात्मक प्रक्रिया में शामिल होते हैं। इनका घर उन सबके लिए खुला है, जो इस कला को सीखने में दिलचस्पी रखते हैं। लेकिन याद रखिए - इस काम में बहुत लगन और धैर्य की जरूरत है।

श्रद्धांजलि

(1969-2008)

स्व. श्री प्रकाश भाट

एक लकड़ी का टुकड़ा किसी भी शक्ल में तब्दील हो सकता है ...टेबल, दरवाजा या फिर कोई चेहरा! प्रकाशजी एक अनूठे कलाकार थे, जो लकड़ी के एक साधारण टुकड़े को एक अनोखे किरदार का रूप दे देते थे। आप एक ही समय में 12 से ज्यादा कठपुतलियों पर काम करते देखे जा सकते थे - उन पर नक्काशी करना, पेंटिंग करना और पोशाक तैयार करना...। शाम ढलते-ढलते कई नए दोस्त इस दुनिया में कदम रख चुके होते हैं। प्रकाशजी का पूरा समुदाय कठपुतली-कला से जुड़ा है, लेकिन आपका परिवार एक खास पहचान रखता है, क्यों वे पपेट बनाते भी हैं। प्रकाशजी ने यह कला अपने चाचा से सीखी थी। कठपुतली चलाने के अतिरिक्त प्रकाशजी एक अच्छे ढोलक-वादक एवं गायक भी थे। आपने उदयपुर और देशभर में अपनी कला का प्रदर्शन किया तथा कई पुरस्कार भी प्राप्त किए। प्रकाशजी बहुत मिलनसार एवं हॅसमुख इंसान थे और हमेशा अपने हुनर को बॉटने के लिए उत्साहित होते थे। आपने बच्चों एवं युवाओं के साथ कई कार्यशालाऍ की और उन्हें पपेट नचाना भी सिखाया।

प्रकाशजी इस कला के रूप में हमारे बीच हमेशा मौजूद रहेंगे। आज इनका 15 साल का बेटा शिल्पू कठपुतली एवं संगीत की अपनी परम्परा को आगे बढ़ा रहा है।

विलास जाह्नवे

''जय हो! जय हो!'' ... विलासजी बहुत जोश और उत्साह के साथ आपसे मिलेंगे! आप पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के साथ काम करते हैं, लेकिन मूक-अभिनय में आपकी विशेष रुचि है। कॉलेज के दिनों में उदयपुर के कलाकार शैल चोयल का प्रदर्शन देखकर विलासजी की मूक-अभिनय में रुचि पैदा हुई। उसके बाद आपने लोगों और अलग-अलग स्थितियों का बारीकी से अवलोकन करना शुरू किया। विलासजी मानते हैं कि 'मूक-अभिनय' एक वैश्विक भाषा है, जिसे कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक कोई भी समझ सकता है। विलासजी के अभिनय में निर्जीव चीजें भी बोल पड़ती है। आप मानते हैं कि आज मास मीडिया हमें बनावटी और नकली दुनिया के मोह में भ्रमित कर रहा है, जबकि थिएटर और माइमिंग हमें अपने आपसे एवं असली लोगों से जोड़ता है। आप खासकर ''अनोखी क्षमताओं'' वाले बच्चों के साथ काम करना पसन्द करते हैं तथा हर साल शिल्पग्राम में ''उमंग'' उत्सव का आयोजन करते हैं, जहॉ ये विभिन्न कलाओं से रू-ब-रू होते हैं।

पेशे से चार्टेड अकाउंटेण्ट और शौक से फोटोग्राफर! दिनेशजी अंक और चित्र दोनों का आनन्द लेते हैं। आपको अलग-अलग जगह घूमने और जंगली जीवन के दृश्यों को छायाचित्रों में कैद करने में बहुत दिलचस्पी है। बचपन में ही टीवी और पत्रिकाओं में फोटोग्राफी के नमूने देख-देखकर आपकी रुचि होने लगी। बस! आपने कैमरा हाथ में पकड़ा और शुरु हो गए। दिनेशजी बहुत शान्त एव हँसमुख इंसान है। आप और आपका स्टूडियो फोटोग्राफी सीखने में रुचि रखने वाले लोगों के लिए हमेशा खुले हैं।

दिनेश पगारिया

स्कूल के दिनों से ही शैलेन्द्रजी को प्रकृति में रमना बहुत अच्छा लगता है। छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े किस प्रकार प्रकृति के जीवनचक में सन्तुलन बनाए रखने में क्या भूमिका निभाते हैं; यह समझने के लिए इन्होंने कॉलेज में इकोलॉजी, कृषि एवं कीटविज्ञान की पढ़ाई की। आपने पर्यावरणीय जागरुकता के मुद्दों पर काम किया और कई प्रेरक लोगों के सम्पर्क में आए। आपने अपने जीवन का आनन्द खोजा - बर्ड-वॉचिंग में। जब भी मन हुआ, भोर होने से पहले अपनी दूरबीन लेकर चल पड़े चिड़ियो की दुनिया में। आप मानते हैं कि हम जितना प्रकृति के करीब होते हैं, उतनी ही ज्यादा शान्ति एवं सुकून महसूस करते है और प्रकृति के बारे में हमारी समझ बढ़ती हैं। उदयपुर के आस-पास बर्ड-वॉचिंग के लिए शैलेन्द्रजी आपको आमन्त्रित करते हैं।

शैलेन्द्र तिवारी

सितारे और भी हैं...।